ISSN: 2456-9186, Vol. II, Issue. I, June-2018

वागर्थः

(An International Journal of Sanskrit Research)

Journal Homepage: http://cphfs.in/research.php

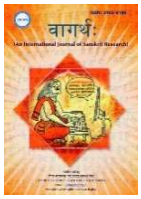

प्रो. राजेन्द्र मिश्र कृत शतककाव्यों में राष्ट्रिय चिन्तन

डॉ.भूपेन्द्र कुमार राठौर

संस्कृत-प्रवक्ता एवं अध्यक्ष

हाडौती संस्कृत अकादमी कोटा (राज.)

Email: dr.bhupendrarathor@gmail.com

शोध-सार - *संस्कृत साहित्य में राष्ट्रप्रेम की धारा अनवरत प्रवाहमान रही है। डा. अभिराज राजेन्द्र मिश्र अपने एक लेख 'अर्वाचीन संस्कृत कविता में जीवनदर्शन' में अपने राष्ट्र प्रेम विषयक रचनाओं की चर्चा करते हैं। भारतशतकम्, प्रभातमंगलशतकम्, भारतीपरिदेवनशतकम्, हिमाचलशतकम्, उज्जयिनीशतकम्, वैशालीशतकम्, गुर्जरशतकम् तथा भारतदण्डकम् आदि स्वतंत्र काव्यों में उनका राष्ट्र प्रेम अनेक रूपों में उभरा हैं। इनमें कहीं जन्मभूमि के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा है अथवा भक्ति दिखती है तो कहीं राष्ट्र की आज की दुर्दशा के प्रति कवियों की बेकली भी दृष्टिगोचर होती है। राष्ट्र की मर्यादा को ध्वस्त करने वाली घटिया राजनीति को प्रायः अर्वाचीन कवियों ने वाच्य अथवा व्यंग्य शैली में कोसा है। राष्ट्रिय भावना को अभिव्यक्ति देने व राष्ट्रिय चेतना को जागृत करने का महत्वपूर्ण तरीका कवि कर्म या लेखन माना जाता है। कवि डा. दयाकृष्ण विजय के शब्दों को राष्ट्रिय चेतना को अभिव्यक्त करने का श्रेष्ठ साधन मानते है। उनके अनुसार - मौन धारण करने, भूमिगत होने जैसे प्रसंग भी राष्ट्रिय चेतना के प्रकटीकरण का माध्यम रहे है परन्तु इन सब में शब्द ही लोकमानस को आन्दोलित, विडोलित तथा झकझोरने वाला रहा है, अन्य नकारात्मक। प्रभावी दोनों है, परन्तु मंचों के ओजस्वी भाषण, गीत और कविताओं के आलम कुछ और ही होते हैं। डा. राजेन्द्र मिश्र की कविताओं में भारत राष्ट्र को गौरवगान वर्णित है। उन्होंने अपने शतक काव्यों में भारतभूमि का गौरव गान, अतीत के वैभवपूर्ण भारत का वर्णन, वर्तमान की अव्यवस्थाओं और विडम्बनाओं के चित्र तो कहीं भारतीय वीरों का देश के लिए मर मिटना व कार्गिल जैसा युद्ध जीतना कवि की राष्ट्रिय भावना के ही द्योतक है।*

I. प्रस्तावना

अर्वाचीन संस्कृत काव्य की सतत् प्रवाहमान धारा को गौरवमयी पारम्परिकता, विडम्बनापूर्ण वर्तमान और भविष्यगत सम्भावनाओं से जोड़ने वाले कवि, नाटककार, कथाकार, साहित्य समीक्षक और शास्त्रवेत्ता त्रिवेणी कवि प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र का अपना विशिष्ट स्थान है। उनकी बहुश्रुत, बहुविध प्रतिभा का लोहा सम्पूर्ण संस्कृत जगत् मानता है। उनकी रचनाधर्मिता के विषय में डा. राधावल्लभ त्रिपाठी लिखते हैं कि - "राजेन्द्र जी का ललित वाङ्मय आज की संस्कृत रचनाधर्मिता की विविध प्रवृत्तियों को सबसे समृद्ध समागम प्रस्तुत करता है। [1] " आज संस्कृत के दृश्यपट पर जितने रचनाकार सक्रिय है, उनमें राजेन्द्र जी का 'कैनवास' सबसे अधिक विस्तृत और बहुआयामी है - इसमें कोई संदेह नहीं। प्रवृत्तियों की दृष्टि से देखें तो उनके साहित्य में स्वच्छन्तावाद या रूमानियत, यथार्थवाद, समाजवाद, आधुनिकतावाद तथा परम्परावाद ये पाँचों प्रवृत्तियाँ यथास्थान अंतर्गुम्फित है। ये पाँचों प्रवृत्तियाँ भी एक दूसरे से विच्छिन्न होकर या एकांकी रूप में उनकी रचनाओं में समाविष्ट नहीं होती। उनकी रचनायात्रा के एक दौर में स्वच्छंदतावादी या रूमान से भी रचनाओं की भरमार है, पर ये रचनाएँ आधुनिक भावाबोध, पारम्परिक काव्यदृष्टि की समझ और यथार्थ तथा आधुनिकता से भी सहकृत है। उनकी आधुनिक जीवन पर लिखी कहानियों व राजनीतिक कविताओं तथा गीतों में समाजवादी विचारधारा

विशेष रूप से प्रतिफलित हुई है। सौन्दर्यदृष्टि और जनजीवन के प्रति संवेदना इन पाँचों स्तरों पर निरंतर अव्याहत बनी रही है। [2]

प्रो. राजेन्द्र मिश्र कृत 'अभिराजसहसक्रम्' में संकलित 10 शतक-काव्यों में जीवन व जगत् के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त पाँचों प्रवृत्तियों के आधार पर उनके शतककाव्यों में कहीं स्वच्छंदतावाद है तो कहीं रूमानियत तो कहीं यथार्थवाद व आधुनिकता का पुट है तो कहीं कवि बिल्कुल परम्परा के मुहाने पर खड़ा नज़र आता है। आज की संस्कृत कविता में युगपरिवर्तन की झलक साफ दिखायी दे रही है। डा. रमाकान्त पाण्डेय के शब्दों में - ''आज का साहित्य राजसी वैभव के पटल से उतरकर जनसामान्य की भावनाओं को अंगीकृत कर चुका है और उसमें आ रहे पात्र भी पूर्णतः परिवर्तित हो चुके हैं। कुल मिलाकर आज का साहित्य लोकजीवन की समग्रपरिधि के चारों ओर घुमता नज़र आता है। [3]

युग परिवर्तन के इस दौर में सभी काव्य प्रवृत्तियाँ परिवर्तित दिखायी दे रही है। इन परिवर्तित प्रवृत्तियों को देखते हुए आज काव्यशास्त्रियों ने काव्य को नवीन प्रकार से परिभाषित किया है। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी के अनुसार -लोकानुकीर्तनं काव्यम्।। अभिनव ।। अर्थात् लोक का अनुकीर्तन ही काव्य है। डा. त्रिपाठी ने आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक तीनों प्रकार के लोको में जीवन व जगत् से सम्पूर्ण तत्वों को आत्मसात् कर लिया है। अतः प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र के शतक-काव्यों का समग्र दृष्टि से आलोड़न-विलोड़न करने पर उनके इन शतक-काव्यों में भारतीय जीवन दृष्टि के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृति सभी पक्ष उभर कर सामने आ जाते हैं। कवि अपनी प्राचीन भारतीय परम्पराओं, गौरवपूर्ण अतीत, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों और तत्कालीन जीवन दर्शन का तो साक्षात् कराता है, समसामयिक घटनाक्रमों और वर्तमान जीवन की वर्तमान में स्थिति को लेकर कवि अत्यधिक व्यथित है। माँ भारती के प्रति समर्पित कवि की यह पीड़ा उचित भी है अतः कवि का लेखन कर्म जीवन के समग्र पहलुओं को तो दर्शाता है और साथ ही संस्कृत के प्रचार-प्रसार के प्रति भी सन्नद्ध है।

II. राष्ट्रिय भावना

संस्कृत साहित्य में राष्ट्रप्रेम की धारा अनवरत प्रवाहमान रही है। डा. अभिराज राजेन्द्र मिश्र अपने एक लेख 'अर्वाचीन संस्कृत कविता में जीवनदर्शन' में अपने राष्ट्र प्रेम विषयक रचनाओं की चर्चा करते हैं। भारतशतकम्, प्रभातमंगलशतकम्, भारतीपरिदेवनशतकम्, हिमाचलशतकम्, उज्जयिनी–शतकम्, वैशालीशतकम्, गुर्जरशतकम् तथा भारतदण्डकम् आदि स्वतंत्र काव्यों में उनका राष्ट्र प्रेम अनेक रूपों में उभरा हैं। ''इनमें कहीं जन्मभूमि के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा है अथवा भक्ति दिखती है तो कहीं राष्ट्र की आज की दुर्दशा के प्रति कवियों की बेकली भी दृष्टिगोचर होती है। राष्ट्र की मर्यादा को ध्वस्त करने वाली घटिया राजनीति को प्रायः अर्वाचीन कवियों ने वाच्य अथवा व्यंग्य शैली में कोसा है।"

राष्ट्रिय भावना को अभिव्यक्ति देने व राष्ट्रिय चेतना को जागृत करने का महत्वपूर्ण तरीका कवि कर्म या लेखन माना जाता है। कवि डा. दयाकृष्ण विजय के शब्दों को राष्ट्रिय चेतना को अभिव्यक्त करने का श्रेष्ठ साधन मानते है। उनके अनुसार - ''मौन धारण करने, भूमिगत होने जैसे प्रसंग भी राष्ट्रिय चेतना के प्रकटीकरण का माध्यम रहे है परन्तु इन सब में शब्द ही लोकमानस को आन्दोलित, विड़ोलित तथा झकझोरने वाला रहा है, अन्य नकारात्मक। प्रभावी दोनों है, परन्तु मंचों के ओजस्वी भाषण, गीत और कविताओं के आलम कुछ और ही होते हैं।" [4]

डा. राजेन्द्र मिश्र की कविताओं में भारत राष्ट्र को गौरवगान वर्णित है। उन्होंने अपने शतक काव्यों में भारतभूमि का गौरव गान, अतीत के वैभवपूर्ण भारत का वर्णन, वर्तमान की अव्यवस्थाओं और विडम्बनाओं के चित्र तो कहीं भारतीय वीरों का देश के लिए मर मिटना व कार्गिल जैसा युद्ध जीतना कवि की राष्ट्रिय भावना के ही द्योतक है। राष्ट्रिय भावना के अन्तर्गत निम्न बिन्दूओं पर विचार करेंगें-

III. भारतभूमि का गौरव

हमारे यहाँ वेद से लेकर आज तक की साहित्यधारा में मातृभूमि का गौरवगान किया जाता रहा है। अथर्ववेद का 'भूमिसूक्त' पृथिवी को मात्र मिट्टी का पिण्ड न मानकर माता का गौरव प्रदान करता है। 'भारतीयपरिदेवन शतकम्' में राजीव गाँधी की मृत्यु पर भारतमाता रूदन करते हुए अपने उसी गौरव का स्मरण करती है -

याऽहमाथर्वणे वेदे ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः।
मतेति सत्वरं घुष्टा पृथिवीपुत्रमानिभिः।।
या चाहं देवतारूपा रम्योद्दीथैरूपस्तुता।
पृथिवीसूक्तमंत्रैस्तैर्विश्वभूमिमहीयसी।।

भारतीयपरिदेवन शतकम् 14-15 ।।

पृथिवी का गौरव तो स्वर्ग लोक से भी बढ़कर है तथा इस भारत भू पर तो खेलने के लिए देवता तक लालायित रहते है। स्वयं भगवान ने मत्स्य, कूर्म, वराह रूपों में आकर हर युग में पृथिवी का उद्धार किया हैं। वही पवित्र, रत्नगर्भा वसुन्धरा ही भरतो की कीर्ति को धारण करने वाली है। यथा -

साऽहं पूततमा धात्री रत्नगर्भा वसुन्धरा।
भारतनां लसत्कीर्त्या भारतीति प्रकीर्तिता।।

भारतीयपरिदेवन शतकम् 19 ।।

'धारामाण्डवीयम्' में कवि ने राजाभोज के द्वारा संरक्षित व पल्लवित धारा नगर का वर्णन किया है। राजा भोज द्वारा शासित इस पृथिवी पर न आतंक न हरणकथा, न सन्धिभेद, न धर्मविरोध था और सम्पूर्ण पृथिवी रामराज्य की तरह अभ्युदय को प्राप्त थी। यथा -

आतंकों दस्युजो नो न च हरणकथा सन्धिभेदों न मित्तौ
नो वा धर्माविरोधो न च नृपतिभयं साधुवर्त्मस्थितानाम्।
भोजे शासत्यथोर्वी धृतविभवभरं रीमराज्यं पुनस्तत्
प्रत्यावृत्तं समाग्राभ्युदयविलसितं भारते भा-रतेऽस्मिन्।।

धारामाण्डवीयम् 46 ।।

मालवा की समृद्ध व सस्यश्यामला भूमि का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि -

धन्येयं मालवी भूर्मृदुसलिलमयी सत्फला विष्णुकान्ता।
यस्यास्सौम्यो निसर्गोऽनुहरति निपुणं स्वीमलोकस्वभावम्।।
पारूष्यं प्रेक्ष्य सेयं भवति विदलिता हृत्समा रन्ध्रभिन्ना
किन्त्वार्द्रत्वाऽनुभूल्या भवति मृदुतरा हन्त निर्यासकल्पा।।

धारामाण्डवीयम् 66 ।।

वैशाली की प्राचीन समृद्धि को याद करके तो कवि की आँखों में अश्रु बिन्दु बह निकलते हैं। गुर्जर भूमि जो कि कृष्ण के द्वारा सम्मानित है, जिस धरती पर भगवान कृष्ण ने लीला की हो वह धरती कवि द्वारा वन्दना के योग्य ही है।

अयस्कान्तनिभं भाति यदीयाकर्षणं महत्।
अन्दनन्दनसम्मान्यां वन्दे तां गुर्जरावनीम्।।

गुर्जरशतकम् 1 ।।

धारामाण्डवीयम् में कवि अपनी मातृभूमि प्रयाग का तो अनेक स्थानों पर वर्णन करता है। यथा -

भुक्त्वा चिराय सुरसिन्धुकलिन्दकन्या-
संगप्रपूतमखभूमिनिवाससौख्यम्।
मिश्रोऽभिराज इह सम्प्रति
देवभूमौ,श्रीमाल्यपत्तनमलंकुरूतेकृतार्थः।।

धारामाण्डवीयम् 101।।

इसी प्रकार अपने परिचय के क्रम में ही 'हिमाचलशतकम्' में प्रयाग का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है -

तीर्थोत्तमे यामुनगांगसंग, प्रोल्लासिते प्रीततमे प्रयोग।
अधीतिबोधाचरणप्रचारैर्वागीश्वरीं कीर्तिकरीं समर्च्य।।

हिमाचलशतकम् 95 ।।

कवि भारतभू के हर प्रान्त चाहे वह मालवा हो, गुर्जर प्रदेश हो, वैशाली हो या हिमाचल हो भारत भूमि के प्रति श्रद्धा से नत है। कवि का इस प्रकार का समर्पण प्रमाणित करता है कि कवि का भारत भमि के प्रति पुत्रवत अगाध श्रद्धा व अनुराग है तथा भारत की धरती पर जन्म लेकर वह स्वयं को कृतकृत्य मानता है।

IV. भारत के भव्य अतीत का गौरवगान

अपने राष्ट्र के भव्य अतीत का गौरवगान भी राष्ट्रिय भक्ति का प्रतीक है। राष्ट्र के अतीत की समृद्धि के गौरव गान से जनमानस में राष्ट्र के प्रति सर्वस्व न्यौछावर करने व उसके गौरव को वर्तमान में बनाये रखने की इच्छा जागृत होती है। कवि ने धारा नगरी के प्राचीन वैभव व समृद्धि वहाँ की स्थापत्य कला, शिक्षा संस्कृति साहित्य और कला का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। धारानगरी का वैभव तो इन्द्र की राजधानी अमरावती को भी तिरस्कृत कर देता है। यथा -

शङ्खाम्भोजप्रमाणैर्धनपतिनगरीं गूढवित्तैर्जयन्ती,
मद्यल्लावण्यपूरैरमरपतिपुरीश्चाऽप्यलं खेदयन्ती।
भोगैर्वृन्दारकाणामनुमितिविषयै भोगवत्सास्सपत्नी,
याऽभूद्धारा धरित्र्यां धरणिपतिलसद्राजधानीप्रधानम्।।

धारानगरी 04 ।।

इस प्रकार पृथिवी पर धारानगरी का वैभव अप्रतिम था। धारानरेश की दान देने में अत्यधिक प्रसिद्धि है। याचकों को दान देने की उसकी प्रवृत्ति को देखकर तो धनकुबेर भी विस्मित था। भोज के राज्य में वापी, कूप, तडाग, शस्त्रशालायें, शास्त्रशाला, भव्य महल, गोपुर आदि विशाल वैभव भव्य भारत के अतीत का स्मरण कराते हैं। वहाँ के भवन के मुख्य द्वार के कंगूरे और अन्दर प्रांगण में

स्थित यज्ञकुंड व मणिखचित प्रांगण वैभव के साथ-साथ तत्कालीन स्थापत्य कला को भी प्रमाणित करते है -

अन्तर्भागे सभा सा त्रितयदिशि युताऽऽसीद्वरण्डैस्सुदीर्घैः
प्रांशुस्तम्भोपरिस्थैर्नयनसुखकरालेख्यभंगिप्रपूर्णैः।
पंचद्वापीप्रमाणं सलिल विरहितं वेदिकांचद्विटंक
यत्रासीद्यज्ञकुण्डं मणिरचितवपुः प्रांगणोद्देशमध्ये।।

धारानगरी 31 ।।

वहाँ का विशाल माण्डवदुर्ग तत्कालीन स्थापत्य का नायाब नमूना था। उसमें स्थित मुंजसरोवर, शिवालय (जो वर्तमान में होशंगशाह का मकबरा है), न्यायशाला आदि के स्थापत्य वैभव को देखकर कवि की अपने वैभव के प्रति श्रद्धा और सुदृढ होती है। उदाहरण देखिये -

प्राच्यां स्थाणोर्निवेशाद् बृहदजिरवती न्यायशाला विशाला
रथ्यावीथाि्रतोलीमणिमयवलभीस्तम्भवेदीविभक्ता।
दर्शं दर्शं यदीयां स्थपतिकरकलाचातुरीं त्वष्टृऋशिल्पे
ऋद्धा जागर्ति नोऽद्धा तुलयितुमनसो रूपदक्षस्य कस्य।।

धारानगरी 50 ।।

आज हजारों साल बीतने के बाद भी विद्वानों के द्वारा भोज को याद किया जाता है और भोज की गौरवगाथा का गान लोक में भिक्षु भी मुक्तकण्ठ से गाते है। कवि, शास्त्रकार, विद्याव्यसनी, भोज के चरित्र के प्रति कवि पूर्णतः आसक्त है और भोजमहोत्सव में जाने पर माण्डवदुर्ग देखने पर कवि वेदना से विगलित है और 'धारामाण्डवीयम्' शतक की रचना उनके उसी संवेदनापूर्ण मानसिक पृष्ठभूमि का परिणाम है।

भारतभू के अतीत के गौरव गान के क्रम में उज्जयिनीशतकम् में कवि ने शकारि विक्रमादित्य के द्वारा शासित पृथिवी का वर्णन किया है जिसके भारत वस्तु स्थिति में योगक्षेमसमन्वितः भारत था। विक्रमादित्य के गुणों व प्रजारंजन के रूप में प्रसिद्धि के कारण वे प्राचीन भारत में कीर्ति को प्राप्त था। यथा -

यामावरैर्गीयमानो वन्दिचारणमागधैः।
पान्थैः प्रशंसितः प्रीत्या कीर्तितो नटनर्तकैः।
अनुत्सेकमलंकारं दधद् विक्रमभूपतिः।
समग्रे भारते ख्यातेः परां काष्ठां रूरोह सः।।

उज्जयिनीशतकम् 22-23 ।।

विक्रमादित्य के काल में वर्णाश्रम धर्म व सदाचार से संरक्षित भारत विश्व में शीर्षस्थ पर था। उज्जयिनी जहाँ विक्रमादित्य व पुष्य मित्र आदि के वीर्य व शौर्य के लिए प्रसिद्ध रही है वहाँ अर्धनारीश्वर भगवान शिव की नगरी व सान्दीपन आश्रम और कृष्ण की विद्यानगरी के रूप में भी उज्जयिनी का महत्व कम नहीं है।

'वैशालीशतकम्' में गण्डकी नदी (नारायणी नदी) पर स्थित वज्जिसंघ की धरती और बुद्ध की धरती कुशीनगरका वर्णन है। कवि लिच्छवियों की प्राचीन समृद्धि को याद करता है। वहाँ की गगनचुम्बी अट्टालिकाये और जहाँ नित्य भेरी की ध्वनि स्थितर यश की घोषणा करती थी अब वहाँ गीदड़ क्रन्दन कर रहे हैं। यथा -

अभ्रंल्लिहाग्राः प्रसादा दधाना गगनश्रियम्।
तव भ्रूभंगमात्रेण यान्ति स्थण्डिलतांक्षणात्।।
यत्र भेरीरवैर्नित्यं घोष्यते स्म स्थिरं यशः।
चित्रं कीदृङ्नु तत्रैव दिवा क्रन्दन्ति फेरवः।।

वैशालीशतकम् 11-12 ।।

वैशाली के प्रदेश का महत्व यहाँ स्वयं विष्णुप्रिया जानकी का जन्म हुआ और विशाल नाम के राजा के द्वारा संस्थापित यह नगरी वैशाली नाम से प्रसिद्ध थी। यह वज्जियों की राजधानी थी तथा तथागत बुद्ध की इस स्थान के प्रति विशेष प्रीति रही है। शताब्दी पूर्व मगधों का साम्राज्य सम्पूर्ण भूमण्डल पर राजशक्ति का निदर्शन था। वैशाली की धरती नालन्दा व विक्रमशिला विश्वविद्यालयों की वजह से भी प्रसिद्ध रही है। उदारविश्वबन्धुत्व व तथागत के उपदेशों के द्वारा यह धरती अनुगृहीत रही है परन्तु मुगलों ने यहाँ के शिक्षा केन्द्रों व सम्पूर्ण संस्कृति को जलाकर राख कर दिया। कवि वैशाली के भग्नावशेषों को देखकर अत्यन्त दुःखी है और प्रार्थना करता है कि भविष्य में भारत का कोई प्रदेश वैशाली की तरह अपने लोगों के वैमनस्य द्वारा नष्ट न हो। यथा -

वैशालीव क्वचिद्राष्ट्रं भारतं विबुधप्रियम्।
यायान्न नामशेषत्वं स्वजनद्रोहधर्षितम्।।

वैशालीशतकम् 96 ।।

कवि की यह कामना उनके राष्ट्रप्रेम को ही अभिव्यक्त करती है।

'गुर्जरशतकम्' में प्राचीन आनर्तदेश (सौराष्ट्र) के रूप में वर्णन है। कवि ने गुजरात के महत्वपूर्ण स्थानों वहाँ उत्पन्न हुए महापुरूषों के कारण वहाँ के महत्व को दर्शाया है। गुजरात का महत्व वहाँ पोरबन्दर में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के कारण ओर बढ़ जाता है। गांधी जी भारत माता की परतन्त्रता रूपी कालिमा को दूर करने

के लिए सूर्य के समान उदित हुए। उन्होंने सत्य अहिंसा के बल पर स्वतन्त्रता संग्राम जीता और भारतमाता कों अंग्रेजों से मुक्त कराया। यथा -

भारतमातरं दीनां मोचयित्वा पराभवात्।
गन्धिवर्यो महात्मासौ जातो राष्ट्रपिता महान्।।

गुर्जरशतकम् 44 ।।

गुजरात की धरती धर्म, कला, लोकसंस्कृति आदि के कारण विख्यात रही है। सस्यश्यामला गुजरात की धरती के स्मरण मात्र से कवि प्रसन्न हो जाता है अतः इस धरती को नमन करते हुए अभिराज राजेन्द्र जी कहते है -

तामहं नौमि पौराणी धरित्रीममृतान्धसाम्।
यस्याः स्मरणमात्रेण प्रहृष्टं जायते मनः।। गुर्जरशतकम् 82 ।।

गुजरात की आर्यधर्म को धारण करने वाली भट्टी, माघ, हेमचन्द्र याज्ञिक आदि संस्कृत कवियों की धरती, गाँधी, पटेल, दयानन्द जैसे महापुरूषों की इस धरती पर पुनः आने को कवि अपने जीवन का सौभाग्य मानता है। यथा -

ईदृश्यां गुर्जरक्ष्मायां समागत्य पुनः पुनः।
आत्मजीवनसौभाग्यं निश्चप्रचमहं वृणे।।

गुर्जरशतकम् 100 ।।

पाकशासनशतकम् अथवा कार्गिलशतकम् तो पाकिस्तान द्वारा किये गये आक्रमण के दौरान लिखा गया अतः यह शतक कार्गिल में हुए शहीदों को श्रद्धांजलि ही है। कार्गिल युद्ध में शहीद हुए भारतीय वीरों की पावन-गाथा है। यथा -

तेषाम्पाकारिभूतानां राष्ट्रभूत्यै हुतात्मनाम्
प्रवीराणां यशोगाथा पावनीयं प्रणीयते।।

पाकशासनशतकम् 13 ।।

कार्गिल युद्ध अभी चल ही रहा था कि अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने कार्गिल के वीरों को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए अनेकों राष्ट्रभक्तिपूर्ण काव्य लिख डाले। डा. लाला शंकर गयावाल के शब्दों में जगत् की समग्र चेतना से चिन्तित संस्कृत कवि प्रतिपटल घटित घटनाओं से अपने आपको क्षणभर भी विलग नहीं करता। कारगिल विजय पर अर्वाचीन संस्कृत पत्रिका दूर्वा का 'कारगिलविशेषांक' कारगिल वीरों को श्रद्धांजलि के रूप में समर्पित है। इस विजय के आनन्द को अपनी अभिव्यक्ति से मुखरित किया है कविवर रमाकान्त शुक्ल ने 'प्रणम्याः कारगिलवीराः' में -

जयनयतेऽस्मदीया गौरवांका कारगिलवीराः।
समच्र्या आसतेऽस्माकं प्रणम्याः कारगिलवीराः।।

पाकशासनशतकम्. 11 ।।

हरिशचन्द्र रेणुपुरकर, मोहनलाल पाण्डे, शशिनाथ झा, बनमाली विश्वाल, डा. रवीन्द्र पण्डा, सम्पूर्णदत्त मिश्र और डा. राजेन्द्र मिश्र आदि कवियों ने कारगिल युद्ध पर अपने-अपने अन्दाज में कारगिल शहीदों को श्रद्धांजलि दी है। डा. रवीन्द्र कुमार पण्डा ने प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र के समान ही पूरा खण्डकाव्य 'कार्गिलम्'लिखा जो कवि के काव्यसंग्रह 'काव्यकैरवं' में आर्वाचीन संस्कृत साहित्य परिषद, बड़ौदरा से 2007 ई. में प्रकाशित हुआ। वस्तुतः जब भी देश पर कोई विपत्ति आयी है, हमने सब भेदभाव भुलाकर अपनी राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया है। इस राष्ट्र यज्ञ में कवि अपनी लेखनी द्वारा जनता को जाग्रत करने के लिए जो समिधायें डालते हैं, वे अपने आप में श्रद्धा की अधिकारिणी है। [5] डा. रवीन्द्रपण्डा के 'कार्गिलम्' खण्ड काव्य में भावाभिव्यंजना परक श्लोक है। किन्तु प्रो. राजेन्द्र मिश्र के कार्गिलम् में ऐतिहासिक तथ्यों, भौगोलिक स्थानों, शहीदों के नामोल्लेख तथा पाकिस्तान की नीतियों और भारतीय शहीदों के देशभक्ति के विविध चित्र हैं। 'कार्गिलम्' पर लिखे ये दोनों की काव्य अनुष्टुप् छंद में है। कार्गिल युद्ध में भारतीय सैनिकों ने जिस प्रकार का शौर्य दिखाया उसकी चर्चा सम्पूर्ण विश्व में हुयी। यथा -

अन्यैश्चापि महावीरैजीवद्भिश्च हुतात्मभिः।
संगरे यादृशं शौर्य सपत्नध्वंसि दर्शितम्।।
इदानीमपि तद्विश्वे युद्धसंसदि चर्चितम्।
प्रतिमानं न तस्यान्यद् दृश्यते क्वापि भूतले।।

पाकशासनशतकम् 23-24 ।।

युद्ध हमारे स्वभाव में नहीं है। हमारी भारतीय सेना शौर्य, क्षमाभाव, सहिष्णुता और आक्रमण नहीं करने के सिद्धान्त पर चलने वाली है किन्तु यदि कोई जबर्दस्ती आक्रमण करता है तो फिर दीनता व पलायन भी भारतीय सेना के शब्दकोष में नहीं है। यही कारण है कि भारतीय नीति के अनुसार जीते हुए प्रदेश पाकिस्तान को लौटा दिया थे। युद्ध करना तो सैनिकों की खुजली दूर करने के लिए मात्र एक प्रयास था। यथा -

तस्मादेव जिताभूमिस्सकलापि निर्यातिता।
युद्धकण्डूतिमुक्ताय भारतेनाऽरय स्वतः।।

पाकशासनशतकम् 27 ।।

इस अवसर पर कवि हमारी भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के बंगलादेश के युद्ध के दौरान प्रदर्शित शौर्य व राष्ट्र प्रेम का स्मरण करते हुए कहता है कि -

तदा जगर्ज सिंहीवा सा जवाहरनन्दिनी।
चण्डमुण्डवधोद्योगा कालिकेव भयंकरी।।

पाकशासनशतकम् 31 ।।

इस प्रकार बांगलादेश नामक नवीन राष्ट्र की निर्मति हुयी परन्तु भारत ने जीतकर भी बांगलादेश पर स्वामित्व नहीं जताया वह भूमि उन्हें वाविस कर दी। भारत ने तो युद्ध के उन्माद से ग्र्रस्त पाकिस्तान को सबक सिखाया था। भारतीय सेना ने सम्पूर्ण पाकिस्तान के सैन्य बल को चूर्ण-विचूर्ण व विखण्डित कर दिया। कवि भारत की समृद्धि, विकास व वीरता का गुणगान करते हुए कहता है कि पाकिस्तान भारत के वैभव की बराबरी कभी भी नहीं कर सकता क्योंकि गीदड़ की खाल पहनकर गधा सिंह नहीं बन सकता। यथा -

व्याघ्रचर्मपरीतोऽपि गर्दभो नैति सिंहताम्।
ज्ञायते न कथं सत्यं वराकैः पाकनेतृभिः।।

पाकशासनशतकम् 46 ।।

कार्गिल युद्ध के दौरान शहीद हुए सैनिकों को याद करते हुए कवि कहता है कि जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया और कारगिल क्षेत्र को पुनः मुक्त करवाया उन सब शहीदों के ऋण से हम उऋण नहीं हो सकते जिन्होंने अपनी युवावस्था में सम्पूर्ण भोगों को छोड़कर अपने प्राणों की आहुति दे दी। यथा -

अधमर्णा वयं सर्वे तेषां नूनं कृतात्मनाम्।
विहाय सकलानभोगान्नव्ये वयसि ये गताः।।

पाकशासनशतकम् 108 ।।

भारत के लिए अपने राष्ट्र के रक्षण के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने वाले शहीदों को हमारे देश में पूर्ण सम्मान मिला है। हर राज्य में हुए शहीदों के परिवारों को समाज व शासन के द्वारा मान सम्मान व सरकार की ओर से सहायता प्रदान की गयी। भारत के लिए शहीद हुए सैनिक हमारे बीच आज भी जीवित है। उनके प्रति श्रद्धाभाव व वात्सल्य हर भारतीय के मन में है। वह तो राष्ट्र के लिए प्राण न्यौछावर कर अमर हो गये हैं -

समुच्छलति वात्सल्यं श्रद्धाभावश्च तान्प्रति।
दिवंगतास्त्वपि प्राज्यं वीरा जीवन्ति भारते।।

पाकशासनशतकम् 142 ।।

शहीदों के प्रति श्रद्धाभाव में डूबे कवि की अगाध राष्ट्रिय भक्ति का ही द्योतक है कि वे शहीदों को अर्पित किये गये इन शब्दसुमनों द्वारा अपनी लेखनी को पवित्र मान रहा है।

अभिराजीतनूजोऽयं तस्मात्तद्गुणशंसनैः।
पवित्रीकुरूवे स्वीयां लेखनीञ्च सरस्वतीम्।।

पाकशासनशतकम् 144 ।।

कवि प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र के प्रस्तुत संकलन के अधिकतर शतकों में भारत राष्ट्र के गौरव का ही वर्णित है। उन्होंने देश के प्राचीन गौरव को लेकर श्रद्धा अभिव्यक्त की है तथा प्राचीन भारत के सांस्कृतिक, साहित्यिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक वैभव को अभिव्यक्त किया है। इससे प्रो. मिश्र की राष्ट्र के प्रति श्रद्धाभावना तो दिखायी देती है साथ ही पाठकों में भी देशभक्ति के भाव को जागृत करने में उनका विशेष योगदान है। लेखन ही नहीं मंचों से देशभक्ति पूर्ण कविताओं के माध्यम से जनता में देशभक्ति के भाव भरने में भी कवि सिद्धहस्त है। कवि का लेख व मंचों पर कविताओं का अभिव्यक्तिकरण और मधुर वाणी की देवप्रदत्त प्रतिभा सब मिलकर प्रो. मिश्र को राष्ट्रकवि के रूप में प्रतिष्ठित करते है।

V. वर्तमान भारत की दुर्दशा का वर्णन

प्राचीन गौरव का स्मरण कर और वर्तमान की वैमनस्यपूर्ण स्थितियों को देखकर कवि हतप्रभ व विस्मित है। वर्तमान भारत की दुर्दशा देखकर यह अभिव्यक्ति का तरीका कवि की अपनी पहचान बनाता है। राष्ट्र की विडम्बनात्मक स्थितियों की वेदना व्यक्त करना कवि के देश के प्रति प्रेम को ही अभिव्यक्त करता है। प्राचीन भारत समृद्धि, शिक्षा, कला व अध्यात्मविधा का केन्द्र था वह भारत आज लम्पटों, धूर्तों व दुराचारियों से घिर गया है। मनुस्मृति में भी कहा है कि **स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः**। इसी भाव को अभिव्यक्त करते हुए अभिराज जी कहते हैं -

यत्रागत्यचरितं स्वं सकाशादग्रजन्मनाम्।
अशिक्षन्त पुरा काले पृथिव्यां सर्वमानवाः।।
तस्मिन्नु भारते वर्षे सङ्कुला अद्य लम्पटाः।
बण्डभण्डदुराचारा दुश्चरित्राः प्रवंचकाः।।

भारतीशतकम् 24-25 ।।

प्राचीन वर्णधर्म व्यवस्था पर आधारित भारत आज जाति द्रोह की ज्वाला में जल रहा है और ईर्ष्या द्वैष, घृणा से ग्रस्त होकर रसातल की ओर जा रहा है। वह अपने प्राचीन वैभव को खो चुका है।

साम्प्रतंचापि कृष्णांगैर्नृपीभूतैर्नराधमैः।
ईर्ष्यामर्षघृणाग्रस्तैः पातगर्ते निपात्यते।।

वैशालीशतकम् 94 ।।

वर्तमान भारत की सभी स्थितियों में वैपरीत्य दिखायी दे रहा है सर्वत्र चाटूकारिता व अर्थ का प्राधान्य है। गुणों का कोई महत्व नहीं है। सर्वत्र विपरितता का साम्राज्य कुछ इस प्रकार का है -

मूर्खोऽप्यसौ महाविद्वान् कलीबोऽपि सर्वशक्तिमान्।
निर्गुणोऽपि सतां पूज्यस्त्याज्यों निन्द्योऽपि सम्मतः।।

भारतीशतकम् 44 ।।

'भारतीयपरिदेवनशतकम्' में तो स्वयं भारत माता अपनी स्थिति पर रूदन कर रही है। देश में सर्वत्र 'मत्स्यन्याय' व्याप्त है भाई ही भाई का दुश्मन है।

प्रसरिष्यति सर्वत्र मत्स्यन्यायोभयंकर।
मरिष्यन्ति जनाः सर्वे बन्धवो बन्धुभिर्हताः।।

भारतीयपरिदेवनशतकम् 99 ।।

'विस्मयशतकम्' में तो कवि भारत की विडम्बनात्मक स्थितियों को देखकर तो वस्तुतः स्वयं विस्मित है। आज हमारी संस्कृति, आचार विचार सभ्यता यहाँ तक कि देश की गरिमा दांव पर लगी है। चारों ओर सब कुछ जल रहा है किन्तु कोई भी उसको बुझाना नहीं चाहता। सब ओर जनता वर्गसंघर्ष, जाति व धर्म के नाम पर बंट गयी है लेकिन कोई भी उस खाई को पाटना नहीं चाहता। इन सब स्थितियों को देखकर कवि अचम्भित है -

न केऽपि दावाग्निश्मे सयत्ना, न चाऽप्यरण्यश्रियमासुकामाः।
ज्वलत्यतस्सर्वत एव सर्वं, दृष्ट्वेति मे विस्मयमेति चित्तम्।।

विस्मयशतकम् 30 ।।

देश चारों ओर जल रहा है। इस अवस्था को देखकर कवि विचलित है। मानसिक पीड़ा का वर्णन करें भी तो किससे ? सर्वत्र रक्षक ही भक्षक बने हुए है। अतः कवि इस व्यथा को निम्न शब्दों में व्यक्त करता है -

व्यथाकथेयं महती मदीय, निवेदये हन्त कथन्नु कस्मै।
यो रक्षको भक्षयिता स एव, दृष्ट्वेति मे विस्मयमेति चित्तम्।।

विस्मयशतकम् 67 ।।

आज समाज में मत्स्यन्याय व्याप्त है। बलवान कमजोर का शोषण कर रहा है लेकिन प्रशासन पंगु होकर मात्र दर्शक बना हुआ है। समाज में सही न्याय नहीं मिल पा रहा है। न्यायालय में न्यायाधीश रिश्वत देकर खरीद लिये जाते हैं तथा समाज में हत्यारे खुले आम घूम रहे हैं, यह सब देखकर कवि विस्मित है। यथा -

उत्कोचदानैः परितोष्य सम्यक्, न्यायालयं न्यायपर्तिं विधिज्ञम्।
भ्रमन्ति मुक्ता वधिकाः समाजे, दृष्ट्वेति मे विस्मयमेति चित्तम।।

विस्मयशतकम् 69 ।।

अध्यात्मविद्या से पूर्ण इस राष्ट्र में न जाने अनर्थकारी पिपासा (लोभ) कहाँ से आ गया ? हमारी त्यागमूला संस्कृति भोगमूला कैसे हो गयी ? वर्तमान में दारिद्रय, अभाव विषमतायें, अशिक्षा, बेरोजगारी, नैतिक अवमूल्यन ने जाने क्या-क्या व्याप्त है इस धरती पर। राष्ट्र की ऐसी विपन्नता होने पर ऐसे राष्ट्र में कौन कुशल रह सकता है ? कवि भारतमाता की ऐसी दुर्दशा देखकर उसके पुत्रों को धिक्कारता है-

दुःखार्दितायां ननु मातृभूमौ, धिग्जीवनं हन्त तदात्मजानाम्।
राष्टे विपन्ने कुशलं नु केषां, दृष्ट्वेति मे विस्मयेति वित्तम्।।

विस्मयशतकम् 92 ।।

VI. आतंकवाद

प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने भारत की वर्तमान विपन्नावस्था का वर्णन करते हुए आज देश में व्याप्त आतंकवाद का भी वर्णन किया है। भारतमाता कहती है - कि इतनी कष्टापन्न अवस्था तो वेन, रावण और कंस द्वारा भी नहीं की गयी थी जितनी आज दुर्जनों के द्वारा की जा रही। नर रूपी राक्षसों द्वारा पीड़ित भारतमाता की आवाज कोई भी नहीं सुन रहा। यथा -

न वेनेन तथा तप्ता रावणेन न धर्षिता।
न कंसेन तथा क्लिष्टा यथा सम्प्रति दुर्जनैः।।
उध्र्वबाहुर्विरौम्येषा न च कश्चिच्छृणोति मे।
कोऽपि वारयते नो मां नरराक्षसपीडिताम्।।

भारतीशतकम् 22-23 ।।

भारत में आतंक फैलाने में पड़ौसी देश पाकिस्तान की मुख्य भूमिका है। पाकिस्तान का भारत के प्रति स्वतः बैर है ही। वे सोते जागते भारत द्रोह के विषय में ही सोचता है। वहाँ के प्रशासक,

राजनेता भारत में आतंककारी गतिविधियों को चलाकर भारत को कमजोर करना चाहते हैं, वे गुप्त रूप से आतंकवादियों को भेजकर भारत में सौमनस्य व सुव्यवस्था को समाप्त करना चाहते हैं। यथा -

आतंकवादिनः क्रीतान् गूढं सम्प्रेष्य भारते।
सौमनस्यंच सौराज्यं भारतस्य विकुर्वते।।

पाकशतकम् 66 ।।

पाकिस्तान भारत के विषय में अनेक अफवाहों को फैलाकर भारत के साथ मित्रता नहीं चाहता और भारत है कि अनेक बहानों से पाकिस्तान के साथ मित्रता बढ़ाना चाहता है। पाकिस्तान मुस्लिम देशों को भारत के प्रति भड़काता है और इस प्रकार विश्व में शान्ति का उद्घोष करने वाला भारत पाकिस्तान की वजह से आज स्वयं अशान्त व खण्डित है। ऐसी वैषम्यपूर्ण स्थिति को देखकर लेखक विस्मित है -

उद्घोषकस्सम्प्रति विश्वशान्ते, र्विभात्यशान्तः स्वयमेव शीर्णः।
हा हन्त देशो ननु भारताख्यो, दृष्ट्वेति मे विस्मयमेति चित्तम्।।

विस्मयशतकम् 85 ।।

भारत का स्वर्ग कही जाने वाली कश्मीर की धरती आज आतंकवाद के कारण ही विपन्नावस्था में है। जिस कश्मीर में शैव दर्शन लिखा गया वहाँ आज दैत्यों को अट्टहास करते देखकर आश्चर्य होता है। आज कश्मीर से सभी पण्डितों को निकाल दिया गया है, ऐसे प्रशासन को धिक्कार है। सीमापार से आतंकवादी घुसकर आतंक मचाते हैं और हम मूक दृष्टा बने हुए है, यह सब देखकर कवि आश्चर्यचकित है।

सीमामतिक्रम्य गृहे प्रविष्टा, अनर्थजातं विदधत्यनल्पम्।
अरातयो हन्त वयंच मूका, दृष्ट्वेति मे विस्मयमेति चित्तम्।।

विस्मयशतकम् 89 ।।

सीमा पर हमारे सैनिकों के सिर काट दिये जाते हैं। अभी हाल ही में हमारे वीर सैनिकों के सिर काट दिये गये लेकिन हम चुप रहते हैं। यह हमारी सहनशीलता है या किंकत्र्तव्यविमूढ़ता की सहजता है, समझना मुश्किल है। पाकिस्तान अपनी दीन-हीन विपन्न स्थिति और पड़ौसी भारत की समृद्धि सहन नहीं कर पाता अतः उसे कश्मीर की चिंता निरन्तर बाधा पहँुचाती है जिस प्रकार कोई दरिद्र पड़ौसी की समृद्धि देख ललचाता है।

किन्तु कश्मीरचिन्ता तं बाधतेऽलं निरन्तरम्।
समृद्धिः प्रतिवेशस्य दरिद्रं लोभयेद्यथा।।

पाकशतकम् 52 ।।

राजीव गाँधी की मृत्यु पर तो कवि पूर्णतः विचलित दिखायी देते है और 'भारतीपरिदेवनशतकम्' में तो उन्होंने वर्णन किया है कि जैसे कि पृथिवी प्रलय सागर में डूब गयी हो। कवि स्वयं अपने आपको अशक्त व असहाय महसूस करता है। भारत माता की ऐसी विपन्नावस्था देखकर तो ईश्वर भी पृथ्वी पर उतरने में डर रहा है। धर्म की स्थापना करने वाला और दुर्जनों का विनाश के लिए हर युग में उत्पन्न होने वाला ईश्वर भी अपनी प्रतीज्ञा को भूल गया है। अतः कवि किसकी सहायता करे ? कहाँ जाये, किसके पास जायें ?

किं करोमि सहायं कं यामि को नु श्रृणोति मे।
नावातरति मद्भूमावीश्वरोऽपि भयान्वितः।।
विशोधने खलानां तु सोऽप्यशक्तः प्रतीयते।
तस्मात्प्रतिज्ञां विस्मृत्य भारतं नायियासति।।

भारतीशतकम् 105-106 ।।

भारत पर फैले आतंकवाद व अलगाववाद की स्थितियों में कोई ऐसा दिखायी नहीं देता जो भारत भूमि को पुनः संगठित कर सके औ यहाँ शान्ति व विश्वबन्धुत्व को पुनः स्थापित कर सके। आज मूर्ख स्वच्छंदता से इस धरती का उपभोग कर रहे है अतः खण्डित व आतंक से भयभीत धरती की पालना के लिए पुनः भोज जैसा राजा चाहिये अतः कवि भोज को पुनः धरती पर अवतरित होने का आह्वान करता है -

राजर्षे भोजराज! प्रसभवतर स्वोपलाल्यां धरित्रीं
पश्येमां त्रिर्विभक्ता पुनरपि च वपुः खण्डनातंकभीताम्।
ज्योत्स्नाभ्रान्तिप्रमुग्धा जरठशठधियो न्यक्कृतेन्दुप्रभावाः
स्वैरं भुजंन्ति मूढा भरतभुविमामद्य खद्योतकल्पाः।।

धाराशतकम् 89 ।।

भारत भूमि आज आतंकवाद के कारण रक्तरंजित है। आये दिन घटित होती आतंकी घटनाओं से आम आदमी भयभीत है। वर्षों से परस्पर भाईचारे से रहते हुए हिन्दू-मुस्लिमों के मध्य द्वैष फैलाने का काम पाकिस्तान कर रहा है इससे हमारी एकता तो विखण्डित होती ही है, आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो रही है। न चाहकर भी भारत को सैन्य व सुरक्षा बलों पर अतिरिक्त भार वहन करना पड़ता है अतः कवि ने मिलकर रहने का संदेश दिया है क्योंकि बिना एकता के प्रगति संभव नहीं है।

मन्त्रः समः स्यात्समितिः समानी, समानमस्माकमिदन्तु चित्तम्।
विनैक्यभावं प्रगतिर्न भाव्या, दृष्टैवेति मे विस्मयमेति चित्तम्।।
विस्मयशतकम् 63।।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र का संक्षेप भाव यह है कि अभिराज जी की अपने प्राचीन सांस्कृति गौरव के प्रति आस्था कूट-कूट कर भरी है। उनके अधिकतर शतक जैसे धारामाण्डवीयम् (भोजशतकम्), गुर्जरशतकम्, उज्जयिनीशतकम्, वैशालीशतकम् और हिमाचलशतकम् प्राचीन भारत के गौरवगान है और भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य के स्तवन है। इनमें भारत के सांस्कृतिक व धार्मिक महत्त्व व ऐतिहासिक व पौराणिक संदर्भों का सम्पूर्ण चित्रण कवि द्वारा किया गया है। 'प्रबोधशतकम्' कवि को कालिदास की परम्परा का अधुनातन कवि स्वीकार करती है। 'विस्मयशतकम्' में ह्रास होते भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, हिन्दू-मुस्लिमों के परस्पर विद्वेष, वर्तमान समाज में व्याप्त राजनीति की विडम्बनात्मक स्थितियों को देखकर भावुक कवि स्वयं विस्मित है। 'भारतीयपरिदेवशतकम्' राजीवगाँधी की मृत्यु पर भारतमाता के संताप को व्यक्त करता है तो 'पाकशासनशतकम्' कार्गिल के शहीदों को श्रद्धांजलि तो देता ही है, भारत-पाक सम्बन्धों व आतंकवाद की समस्या पर भी चिन्ता व्यक्त करता है। 'सौवस्तिकम्' शतक में देववाणी की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए संस्कृत द्रोहियों को ललकारा है। उपर्युक्त समस्त शतकों को पढ़कर जो एक बात सामान्य है वह यह कि कवि की भारतीय संस्कृति व भारत राष्ट्र गौरव को याद करके कवि गौरान्वित महसूस करता है तो वर्तमान स्थितियों को देखकर व्यथित होता है। कवि की सम्पूर्ण सर्जना जनचेतना को जागृत कर, पुनः भारत को विश्व में स्वाभिमान व सम्मान दिलाने का प्रयास मात्र है। भारतीय होने के नाते कवि का यह प्रयास स्तुल्य एवं वरणीय है।

सन्दर्भ सूची

[1]. डा. राधावल्लभ त्रिपाठी, अभिराज राजेन्द्र मिश्र का 'अंदाज-ए-बयां और' दृक्, दृक भारती, ईलाहाबाद, पृ. -6-7, अंक 6, जुलाई-दिसम्बर २००१।

[2]. प्रो. रमाकान्त पाण्डे, अभिनवकाव्यालंकारसूत्रम्/संस्कृत काव्य शास्त्र का अभिनव आयाम, 'दृक्, दृक भारती, ईलाहाबाद, पृ.-99, अंक 13, जनवरी-जून २००५।

[3]. डा.राजेन्द्र मिश्र, अर्वाचीन संस्कृत कविता में जीवन दर्शन, दृक्, दृक भारती, ईलाहाबाद, पृ.-3-4, अंक 6, जुलाई-दिसम्बर २००१।

[4]. डा. दयाकृष्ण 'विजय', सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतीय साहित्य, घाटिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.-56, 1984।

[5]. डा. दयाकृष्ण 'विजय', सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतीय साहित्य, घाटिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.-2, 1984।

[6]. डा.राजेन्द्र मिश्र, अभिराजसहस्रकम्, Vaijayant Prakashan 8, Baghambari Road, Bharadwajpuram Allahabad -6, 2000।